Open Access
IJASSH
International Journal of Arts, Social Sciences and Humanities
(A Quarterly, Refereed, & Peer Reviewed International Journal)
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://ijassh.aaassher.org/
ISSN (Online): 2584-1130
Volume 3, Issue 4, December 2025; Pages 09 – 11
DOI: 10.5281/zenodo.18152915

Original Research Article

सोशल मीडिया और हिंदी भाषा की स्थिति: एक समग्र विश्लेषण

डॉ. रामरतन विट्ठलराव शिंदे

हिंदी विभाग, विवेक वर्धिनी महाविद्यालय, देवणी, जिला: लातूर ४१३५१९ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: ramratanshinde19@gmail.com

Received: 21 December 2025 | Accepted: 27 December 2025 | Published: 30 December 2025

सारांश

डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने वैश्विक संचार के परिदृश्य को मौलिक रूप से परिवर्तित कर दिया है। भारत जैसे बहुभाषी देश में, यह परिवर्तन विशेष रूप से स्पष्ट है, जहाँ हिंदी भाषा ने ऑनलाइन स्थान में एक प्रभावशाली और गतिशील उपस्थिति दर्ज की है। यह शोध आलेख सोशल मीडिया के विविध प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी की वर्तमान स्थिति, उसके स्वरूप में आ रहे परिवर्तनों, सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों, और भविष्य की संभावनाओं का एक गहन एवं समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में पाया गया है कि सोशल मीडिया ने हिंदी के लिए अभूतपूर्ण पहुँच और लोकतंत्रीकरण के अवसर प्रदान किए हैं, जिससे नए सर्जनात्मक रूपों, सामग्री निर्माताओं के एक विशाल वर्ग, और ज्ञान के लोकव्यापीकरण को बल मिला है। तथापि, इसने भाषाई अशुद्धता, देवनागरी लिपि के ह्रास, हिंग्लिश के प्रभुत्व, और सामग्री की गुणवत्ता से जुड़ी गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। यह आलेख इन द्वंद्वात्मक शक्तियों का परीक्षण करते हुए यह तर्क देता है कि हिंदी का डिजिटल भविष्य एक सचेत, समावेशी और नवप्रवर्तनशील दृष्टिकोण पर निर्भर करेगा, जिसमें तकनीकी हस्तक्षेप, भाषाई नीति-निर्माण और डिजिटल साक्षरता महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

बीज शब्द: सोशल मीडिया, हिंदी भाषा, डिजिटल संचार, भाषाई परिवर्तन, देवनागरी लिपि, हिंग्लिश, भाषाई लोकतंत्रीकरण, ऑनलाइन समुदाय, डिजिटल भाषाविज्ञान, भारतीय इंटरनेट, सोशल मीडिया एल्गोरिदम, सांस्कृतिक पहचान।

प्रस्तावना

21वीं सदी का सामाजिक-तकनीकी परिदृश्य सोशल मीडिया द्वारा गहराई से आकारित है। यह मात्र संचार का माध्यम नहीं, बल्कि सार्वजनिक विमर्श, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और पहचान निर्माण का एक प्रमुख क्षेत्र बन गया है। वैश्विक संदर्भ में, अंग्रेजी के प्रभुत्व के बावजूद, स्थानीय भाषाएँ डिजिटल अंतरिक्ष में तीव्र गति से अपना स्थान बना रही हैं। भारत में, जहाँ 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 44% जनसंख्या हिंदी को अपनी मातृभाषा मानती है, सोशल मीडिया हिंदी के पुनर्जन्म और पुनर्परिभाषा का एक शक्तिशाली अखाड़ा साबित हुआ है। यह आलेख इसी जटिल परिघटना का विस्तृत अन्वेषण करता है। हम यहाँ हिंदी की डिजिटल यात्रा, उस पर सोशल मीडिया के बहुआयामी प्रभाव (सकारात्मक एवं नकारात्मक), और एक गतिशील ऑनलाइन भाषा के रूप में उसके भविष्य का विश्लेषण करेंगे। यह अध्ययन न केवल भाषाविज्ञान के छात्रों, बल्कि मीडिया अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन एवं समाजशास्त्र के शोधार्थियों के लिए भी प्रासंगिक है।

हिंदी का डिजिटल विस्तार: आँकड़े एवं प्रवृत्तियाँ

भारत में सस्ते स्मार्टफोन और डेटा पैकेजों की क्रांति ने "डिजिटल भारत" के द्वार खोल दिए हैं। इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (IAMAI) की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 80 करोड़ से अधिक सक्रिय इंटरनेट उपयोक्ता हैं, जिनमें से अधिकांश भारतीय भाषाओं का प्रयोग करते हैं। गूगल-कैंटर की एक रिपोर्ट इंगित करती है कि हिंदी इंटरनेट उपयोक्ता अंग्रेजी उपयोक्ताओं की तुलना में दोगुनी तेजी से बढ़ रहे हैं।

- **प्लेटफॉर्म-वार प्रभुत्व:** यूट्यूब हिंदी सामग्री का सबसे बड़ा केंद्र बन गया है, जहाँ शिक्षा (जैसे 'kहन Academy'), वित्त ('मुतुअल फंड्स atलफा'), मनोरंजन ('बीबीसी न्यूज़ हिंदी') और लाइफस्टाइल ('फ़िट tuber') से जुड़े चैनल करोड़ों सब्सक्राइबर्स तक पहुँच रहे हैं। व्हाट्सएप और फेसबुक समुदायों में हिंदी समूह स्थानीय समाचार, धार्मिक चर्चा और सामाजिक जुड़ाव का प्रमुख माध्यम हैं। ट्विटर (X) पर हिंदी में राजनीतिक एवं सामाजिक विमर्श प्रबल है, जबकि इंस्टाग्राम और टिकटॉक पर दृश्य-केंद्रित हिंदी कंटेंट (रील्स, मीम्स) का बोलबाला है।
- **नए सामग्री निर्माता (क्रिएटर्स):** सोशल मीडिया ने 'इन्फ्लुएंसर' और 'क्रिएटर' की एक नई पीढ़ी को जन्म दिया है, जो पारंपरिक मीडिया गेटकीपर्स से स्वतंत्र है। गाँव के शिक्षक, छोटे शहर के कॉमेडियन, और गृहिणियाँ हिंदी में सामग्री बनाकर राष्ट्रीय पहचान बना रहे हैं।

भाषाई स्वरूप, प्रयोग एवं परिवर्तन का त्रिकोण

सोशल मीडिया ने हिंदी के स्वरूप, प्रयोग और परिवर्तन की प्रक्रिया को गति प्रदान की है, जिससे एक नई 'डिजिटल हिंदी' का उदय हुआ है।

- **सर्जनात्मकता एवं नवाचार**
  - **मीम्स एवं इंटरनेट संस्कृति:** हिंदी मीम्स ने व्यंग्य और सामाजिक टिप्पणी का एक लोकप्रिय माध्यम बनाया है। ये अक्सर हिंग्लिश, स्थानीय बोलियों के शब्दों और दृश्य संदर्भों का मिश्रण होते हैं।
  - **नई साहित्यिक विधाएँ:** 'माइक्रो-पोएट्री' (ट्विटर कविताएँ), 'डिजिटल कहानी कहना' (इंस्टाग्राम कहानियाँ), और 'ब्लॉगिंग' ने साहित्यिक अभिव्यक्ति के नए रूपों को जन्म दिया है।
  - **लोकभाषाओं का सम्मिलन:** सोशल मीडिया पर मानक हिंदी के साथ-साथ भोजपुरी, राजस्थानी, हरियाणवी आदि बोलियों का प्रयोग भी बढ़ा है, जिससे भाषा अधिक समृद्ध और समावेशी हुई है।
- **प्रमुख चुनौतियाँ एवं विमर्श**
  1. **देवनागरी बनाम रोमन लिपि:** टाइपिंग की सुविधा के कारण रोमन लिपि में हिंदी लिखने का प्रचलन भारी मात्रा में बढ़ा है (जैसे "aaj ka plan kya hai?")। इससे देवनागरी लिपि के ज्ञान और प्रयोग में कमी आने का खतरा है, जो भाषा की लिखित सांस्कृतिक विरासत से सीधा जुड़ाव है।
  2. **हिंग्लिश का प्रभुत्व एवं भाषाई संकरता:** हिंग्लिश ने डिजिटल हिंदी का एक *लिंगुआ फ्रैंका* (साझा भाषा) बना लिया है। जबकि यह संचार को सहज बनाता है, इससे हिंदी की मूल शब्दावली के प्रयोग में कमी और भाषाई पहचान का संकट भी उत्पन्न होता है।
  3. **व्याकरणिक अव्यवस्था एवं अशुद्धियाँ:** त्वरित संचार की आवश्यकता ने वर्तनी की अशुद्धियों ("है" को "hai", "करना" को "krna"), अनौपचारिक संक्षिप्तीकरण और व्याकरणिक लापरवाही को सामान्य बना दिया है। यह दीर्घकाल में भाषाई कौशल पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है।
  4. **सामग्री की गुणवत्ता एवं एल्गोरिदम का प्रभाव:** सोशल मीडिया एल्गोरिदम अक्सर विवादास्पद, संवेदनाशून्य या अतिसरलीकृत हिंदी सामग्री को प्राथमिकता देते हैं, जबकि गहन विश्लेषण, साहित्यिक चर्चा या शैक्षिक विषयों को कम दृश्यता मिलती है।

सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव एवं शक्ति गतिशीलता

सोशल मीडिया पर हिंदी के उदय का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

- **ज्ञान का लोकतंत्रीकरण:** पारंपरिक रूप से ज्ञान का स्रोत रहे अंग्रेजी-दाँचे अभिजन वर्ग के एकाधिकार को हिंदी सोशल मीडिया ने तोड़ा है। विज्ञान, कानून, चिकित्सा और प्रौद्योगिकी का ज्ञान अब हिंदी में सुलभ है।
- **सामुदायिक निर्माण:** हिंदी सोशल मीडिया ने वैश्विक स्तर पर बिखरे हिंदीभाषी समुदायों को जोड़ा है, जिससे एक साझा सांस्कृतिक पहचान मजबूत हुई है।
- **राजनीतिक एवं सामाजिक जागरूकता:** हिंदी में चलने वाले हैशटैग अभियान सामाजिक मुद्दों पर चर्चा को मुख्यधारा में लाते हैं और सामूहिक कार्रवाई के लिए प्रेरित करते हैं।
- **पीढ़ीगत अंतराल:** डिजिटल हिंदी के नए रूपों ने पारंपरिक हिंदी भाषी बुजुर्ग वर्ग और नई पीढ़ी के बीच एक संचार अंतराल भी पैदा किया है।

भविष्य की राह: अनुशंसाएँ एवं नीतिगत विमर्श (The Path Forward: Recommendations and Policy Discourse)

हिंदी को सोशल मीडिया पर एक समृद्ध, प्रामाणिक और प्रभावशाली भाषा के रूप में विकसित करने के लिए बहु-स्तरीय प्रयासों की आवश्यकता है।

1. **तकनीकी नवाचार एवं सुगम्यता:**
   - **देवनागरी इनपुट टूल्स:** अधिक सहज, भविष्यकथन (प्रेडिक्टिव) और स्वचालित शुद्धिकरण वाले कीबोर्ड एवं टूल्स का विकास।
   - **भाषा प्रौद्योगिकी:** हिंदी के लिए उन्नत ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन (OCR), स्वर-से-पाठ (Speech-to-Text), और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) एप्लिकेशन को बढ़ावा।
2. **गुणवत्तापूर्ण सामग्री संवर्धन:**
   - **संस्थागत भागीदारी:** शैक्षणिक संस्थान, सार्वजनिक सेवा प्रसारक (जैसे दूरदर्शन, आकाशवाणी), और सांस्कृतिक निकाय हिंदी में उच्च-गुणवत्ता वाली डिजिटल सामग्री निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाएँ।
   - **क्रिएटर प्रोत्साहन:** शैक्षिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक सामग्री निर्माताओं को मुद्रीकरण एवं प्लेटफॉर्म सहयोग के माध्यम से प्रोत्साहित किया जाए।
3. **शिक्षा एवं डिजिटल साक्षरता:**
   - पाठ्यक्रमों में 'डिजिटल भाषाई नैतिकता' को शामिल करना, जिसमें प्रभावी ऑनलाइन संचार के साथ-साथ भाषाई शुद्धता का महत्व भी सिखाया जाए।
   - शिक्षकों एवं वयस्कों के लिए डिजिटल हिंदी प्रयोग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम।
4. **प्लेटफॉर्म नीतियाँ एवं जवाबदेही:**
   - सोशल मीडिया कंपनियों को हिंदी कंटेंट मॉडरेशन के लिए पर्याप्त एवं प्रशिक्षित मानव संसाधन नियोजित करने चाहिए।
   - एल्गोरिदम को विविधता-पूर्ण और गुणवत्ता-केंद्रित हिंदी सामग्री को बढ़ावा देने के लिए ट्यून किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया हिंदी भाषा के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ साबित हो रहा है। यह एक ऐसा दर्पण है जो भाषा की अनुकूलनशीलता और जीवंतता को तो दर्शाता ही है, साथ ही उसके समक्ष खड़े संकटों को भी उजागर करता है। हिंदी का डिजिटल परिवर्तन केवल भाषाई नहीं, बल्कि एक गहरा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन है, जो सूचना, शक्ति और पहचान के नए समीकरणों को जन्म दे रहा है। भविष्य में, हिंदी की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि हम तकनीकी सुविधा और भाषाई शुद्धता, लोकप्रिय अभिव्यक्ति और गुणवत्तापूर्ण सामग्री, तथा वैश्विक जुड़ाव और स्थानीय पहचान के बीच कितना सन्तुलन स्थापित कर पाते हैं। सोशल मीडिया हिंदी को मात्र 'सर्वाइव' नहीं, बल्कि डिजिटल युग में 'थ्राइव' करने का अवसर प्रदान करता है, और इस अवसर का दायित्वपूर्ण उपयोग ही हमारी सामूहिक भाषाई एवं सांस्कृतिक समृद्धि की कुंजी है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. शिखा रस्तोगी, पुष्पा शर्मा (2024). भाषा विज्ञान, हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि 'विशेष'. SBPD Publishing House
2. डॉ. सेवा सिंह बाजवा (2022). सोशल मीडिया के विविध आयाम. K.K. Publications
3. Crystal, D. (2011). *Internet Linguistics: A Student Guide*. Routledge.
4. Ramesh Kumar Chauhan (2023). डिजिटल युग में हिंदी साहित्य: अवसर और चुनौतियां. Kindle Edition
5. Amit Dhawan. (2024). "आधुनिक हिंदी के विकास के परिमाणीकरण की ओर : प्रतिष्ठित डिजिटल समाचार प्रकाशकों द्वारा हिंदी के प्रयोग का कालानुक्रमिक विश्लेषण।" hal-04676970, 1-22
9. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*। (भाषा शिक्षा एवं तकनीकी से संबंधित प्रावधान)।
10. भारत सरकार, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय. (2021). *भारतीय भाषाओं के लिए डिजिटल पहल*।